Com. K. M. Tiwari in conversation with Indu Agnihotri

Recorded on 8 June 2024 in the CPI(M) Delhi Party Office, HKS Surjeet Bhawan, New Delhi

Key Points in Hindi

- कॉमरेड केएम तिवारी का साक्षात्कार सीटू के आर्काइव के लिए लिया गया, जिसमें उनके जीवन, आंदोलन में जुड़ाव और गाजियाबाद-नोएडा के मजदूर आंदोलन के इतिहास पर चर्चा हुई।
- तिवारी ने बताया कि वे पूर्वी उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले के एक मेहनतकश परिवार से हैं और नौवीं कक्षा के बाद घर छोड़कर बनारस, फिर मुंबई गए और अंततः गाजियाबाद की सुदेशी पॉलिटेक्स फैक्ट्री में नौकरी की।
- 1972 में सुदेशी पॉलिटेक्स में मेंटेनेंस विभाग में नौकरी मिली; इमरजेंसी के दौरान मजदूरों के वेतन और इंसेंटिव के मुद्दे पर हड़ताल हुई जिसमें तिवारी आगे आए।
- सीपीएम का घोषापत्र पढ़ने के कारण रास्ते में दो बार पुलिस ने रोका; इससे वर्किंग क्लास आंदोलन के प्रति रुझान और गहरा हुआ।
- 1977 में सीटू से जुड़े; गाजियाबाद में जिंदल, जैन ट्यूब, हिंदुस्तान पाइप जैसी फैक्ट्रियों में यूनियन बनाने का काम शुरू हुआ और बंगाल से आई फैक्ट्रियों के विस्तार के साथ आंदोलन भी बढ़ा।
- 1978 में रिगिंडिया कांड हुआ जहाँ वेतन माँगने पर मालिकों ने गुंडों से गोली चलवाई; दो घंटे में पूरा जनपद बंद हो गया और डीएम को मजबूरन कार्रवाई करनी पड़ी।
- मोदी नगर में मोदी कपड़ा मिल में 15,000 मजदूरों की यूनियन बनी लेकिन नेतृत्व में अराजकता आई; तिवारी ने बताया कि यूनियन के भीतर भी दमन शुरू हो गया जो मजदूर वर्ग की राजनीति के लिए खतरनाक था।

- नोएडा में फीनिक्स और सेज जैसी फैक्ट्रियों में यूनियन बनाई गई; महिला मजदूरों के साथ टॉयलेट जाने पर पाबंदी और गर्भवती महिलाओं से दुर्व्यवहार जैसे मुद्दे सामने आए।
- 1988 में सफदर हाशमी पर हमले के बाद सीटू के जिला सचिव हरांजर पाल सिंह की दफ्तर के गेट पर हत्या कर दी गई; यह आतंक पैदा करने की कोशिश थी लेकिन आंदोलन और तेज हुआ।
- 82-84 में उत्तर प्रदेश में वेज स्ट्रक्चर तय हुआ और एक रुपया प्रति पॉइंट महंगाई भत्ता मिला; यह मजदूरों के लिए दीर्घकालिक लाभकारी रहा।
- गाजियाबाद में बड़ी फैक्ट्रियाँ बंद होने से सीटू की सदस्यता 40,000 से घटकर 5,000-6,000 रह गई; नई हाई-टेक इंडस्ट्री में संगठन बनाना कठिन हो गया।
- ठेका मजदूरी की बढ़ती प्रवृत्ति एक बड़ी चुनौती है — एक फैक्ट्री में 200 परमानेंट और 5,000 ठेका मजदूर होते हैं जिनके वेतन में चार गुना अंतर है; इस असमानता को आंदोलन का आधार बनाने की जरूरत है।
- सीटू के दस्तावेज में जनवादी कार्यप्रणाली पर सबसे अधिक जोर दिया गया — आम मजदूर की राय से फैसले लेना और यूनियन का रिकॉर्ड बनाए रखना जरूरी बताया गया।
- हिंदी भाषी इलाकों में संगठन कमजोर होने का कारण फील्ड खाली छोड़ना है; अयोध्या का उदाहरण देते हुए कहा कि जहाँ लाल झंडे वाले काम छोड़ गए वहाँ सांप्रदायिक ताकतें आ गईं।
- दिल्ली और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में काम के लिए सुझाव दिया कि मंगोलपुरी, मायापुरी जैसे चुनिंदा इलाकों को टारगेट करके वहाँ महिला और ठेका मजदूरों के मुद्दों पर केंद्रित संगठन खड़ा किया जाए।

Key Points in English

- An interview with Comrade KM Tiwari was conducted for the CITU archives, covering his life, his involvement in the movement, and the history of the labor movement in Ghaziabad and Noida.
- Tiwari hailed from a working-class family in the Bahraich district of Eastern Uttar Pradesh; after completing the ninth grade, he left home for Banaras, then Mumbai, and eventually secured a job at the Swadeshi Polytex factory in Ghaziabad.
- He joined the maintenance department at Swadeshi Polytex in 1972; during the Emergency, a strike broke out over wage and incentive issues, in which Tiwari played a leading role.
- He was stopped by the police twice while carrying the CPM manifesto; these incidents deepened his inclination toward the working-class movement.
- He joined CITU in 1977; efforts to form unions began at factories like Jindal, Jain Tube, and Hindustan Pipe in Ghaziabad, and the movement expanded alongside the growth of factories relocating from Bengal.
- The 'Rigindia incident' occurred in 1978, where factory owners hired goons to open fire on workers demanding their wages; the entire district shut down within two hours, forcing the District Magistrate (DM) to take action.

- A union of 15,000 workers was formed at the Modi Textile Mill in Modinagar, but the leadership fell into disarray; Tiwari noted that internal suppression emerged within the union, posing a danger to working-class politics.
- Unions were established at factories like Phoenix and SEZ in Noida; issues such as restrictions on female workers using the restroom and the mistreatment of pregnant women came to light.
- Following the attack on Safdar Hashmi in 1988, CITU District Secretary Haranjar Pal Singh was murdered at the office gate; while this was an attempt to instill terror, the movement only intensified.
- Between 1982 and 1984, a wage structure was finalized in Uttar Pradesh, securing a dearness allowance of one rupee per point; this proved to be of long-term benefit to the workers. - Due to the closure of large factories in Ghaziabad, CITU's membership dropped from 40,000 to between 5,000 and 6,000; organizing within the new high-tech industries has become difficult.
- The rising trend of contract labor poses a major challenge—in one factory, there might be 200 permanent workers alongside 5,000 contract workers, with a fourfold disparity in their wages; this inequality needs to form the basis of the movement.
- CITU documents placed the greatest emphasis on democratic functioning—stressing the importance of making decisions based on the views of ordinary workers and maintaining proper union records.
- The weakening of the organization in Hindi-speaking regions is attributed to leaving the field open; citing the example of Ayodhya, it was noted that communal forces stepped in wherever the 'Red Flag' activists withdrew from the ground.
- Regarding work in Delhi and its surrounding industrial areas, it was suggested that specific localities like Mangolpuri and Mayapuri be targeted to build an organization focused on the issues faced by women and contract workers.